श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज

श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ,
35 सतीश मुखर्जी रोड़,
कलकता।
12 - 05 - 1968

स्नेह भजनेषु,

हैदराबाद में तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो रहा है, यह समाचार सुनकर दु:ख हुआ। हमारा शरीर कभी अच्छा - कभी खराब, इसी प्रकार चलेगा। सुचतुर व बुद्धिमान व्यक्ति इसी प्रकार अच्छे - बुरे के बीच अपने नित्य - आराध्य व प्रियतम - प्रभु की सेवा के लिए प्रयत्न करते हैं।

हमें अपने कर्मफल के अनुसार ही सुख-दुख व संग इत्यादि लाभ होता है। साधक को हमेशा विशेष सतर्कता के साथ जीवन-यापन करना होगा। सतीर्थगणों (गुरु-भईयों) में किसी की कोई दुर्बलता दीखने पर; वह जैसे उक्त दुर्बलता से छुटकारा पा सके, उसके अनुकूल ही प्रीतिभाव के साथ व्यवहार करना उचित है। साधु संग में "बोधयन्तः परस्परम्"

इत्यादि का सौभाग्य होने से ही साधक साधु-संग में रहकर साधन-भजन करते हैं। दूसरों की दुर्बलता देखकर स्वयं को अधिक सतर्क होना होगा जिससे अपना आदर्श-जीवन दूसरों के लिए शिक्षणीय व हितकर हो।

नित्य शुभाकाँक्षी,
श्री भक्तिदयित माधव

श्रील परमगुरुदेव